Leadership, Education, Personality: An Interdisciplinary Journal ISSN: 2524-6178
www.sibe.rpress.co.in, Vol. 18, Issue 12 December 2023, UGC CARE 1

उत्तरमेघ में वर्णित यक्ष के सन्देश में निहित कालिदास का भाव पक्ष

डॉ. श्याम कुमार झा

सहाचार्य, संस्कृत विभाग

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी, बिहार

महाकवि कालिदास द्वारा रचित मेघदूत सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य का श्रेष्ठतम गीतिकाव्य है। इस काव्य में निर्वासित जीवन जी रहे एक यक्ष ने, सुदूर निवासिनी अपनी प्रियतमा यक्षिणी के लिए मेघ के माध्यम से प्रेम सन्देश प्रेषित किया है। कालिदास को यह भली-भाँति ज्ञात था कि धुएँ, जल और आकाश से निर्मित निर्जीव चेतनाशून्य तत्त्वों से बना मेघ, चेतन प्राणियों के द्वारा प्रेषणीय सन्देश को ले जाने में सक्षम नहीं हो सकता। उधर यक्ष व्यथित है, उसे दूसरा कोई मार्ग नहीं सूझता। इसलिए वह मेघ को ही अपनी प्रियतमा के पास दूत रूप में संदेश प्रेषित करने का निर्णय लेता है। कालिदास लिखते हैं-

कामार्ता हि प्रकृतिकृपणश्चेतनाचेतनेषु।[1]

कामासक्त व्यक्ति चेतन और अचेतन में पार्थक्य करने में सक्षम नहीं होता।

मेघदूत में प्रेम, करुणा, दया और संवेदना के एकत्र दर्शन होते हैं। यह एक ऐसा काव्य है जिसमें मानव हृदय में सन्निहित प्रेम का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

ऐसे तो मेघदूत के ऊपर कई टीकाएँ लिखी गई है, किन्तु उसमें मल्लिनाथ द्वारा रचित संजीवनी टीका विशेष रूप से प्रशंसनीय है। मल्लिनाथ ने मेघदूत के विषय में कहा है–

[1] पूर्व मेघ -5

मेघे माघे गतं वयः।

मल्लिनाथ जैसा आलोचक और टीकाकार कहता है कि उसका पूरा जीवन माघ की कविता और मेघदूत के काव्य सौन्दर्य को समझने में ही बीत गया। यह कथन मेघदूत के साहित्यिक वैशिष्ट्य का स्वतः प्रमाण है।

मेघदूत में जैसी मानवीय संवेदना और भारतवर्ष के तत्कालीन भूगोल का चित्रण किया गया है, वैसा अन्य साहित्यिक रचना में मिलना दुर्लभ है। मेघदूत के बारे में संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध आलोचक सुशील कुमार दे ने हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरेचर में लिखा है-

A Large number of attempts were made in later times to imitate the poem, but the Meghadūta still remains unsurpassed as a masterpiece of its kind, not for its matter, not for its description, but purely for its poetry.[2]

मेघदूत काव्य के विषय में साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान और चिन्तक ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने कहा है-

"मेघदूत में कालिदास का असाधारण वर्णन-कौशल एवं कविता-सौन्दर्य प्रदर्शित हुआ है, उससे यह स्पष्ट होता है कि यदि कालिदास ने मेघदूत के अतिरिक्त कोई अन्य रचना न भी की होती, तथापि वे अद्वितीय कवि के रूप में ही स्वीकार किए जाते। मेघदूत का भाव पक्ष कालिदास की अन्य रचनाओं की अपेक्षा कुछ कठिन अवश्य है।"

मेघदूत के बारे में प्रसिद्ध बांग्ला कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने प्राचीन साहित्य पुस्तक में ठीक ही कहा है-

अवन्ती, विदिशा, उज्जयिनी, विन्ध्य, कैलास, देवगिरि, रेवा, शिप्रा, वेत्रवती इन नामों में शोभा, सम्मान और शुभ्रता सन्निविष्ट है, जो लगता है धीरे-धीरे पतित होता चला गया। भाषा, व्यवहार और मानसिकता में जैसे जर्जरता और अपभ्रंश आ गया हो। ऐसा प्रतीत होता है कि यदि किसी प्रकार उस रेवा, शिप्रा और निर्विन्ध्या नदियों के तट पर स्थित

[2] मेघदूत ओ सौदामनी, पृ.72

अवन्ती और विदिशा की ओर प्रवेश करने का कोई मार्ग होता, तो इस चारों ओर फैली हीन कोलाहलपूर्ण स्थिति से मुक्ति पाई जा सकती थी।"

महाकवि कालिदास के विषय में कवि श्रीकृष्ण ने ठीक ही कहा है–

अस्पृष्टादोषा नलिनीव दृष्टा
हाराऽऽवलीव ग्रथिता गुणोधैः।
प्रियाऽङ्कपालीव विमर्दहृद्या
न कालिदासादपरस्य वाणी ॥

उत्तरमेघ में कालिदास ने यक्ष के सन्देश के माध्यम से पूरी मानवता के लिए प्रेम में समर्पण, विश्वास और आपसी समझदारी का एक प्रतिमान स्थापित किया है। इसीलिए मेघदूत को सन्देश काव्य की संज्ञा दी जाती है।

अपने सन्देश को कहने से पहले यक्ष ने मेघ को अलका नगरी, उसका वैभव, यक्षिणी का स्वरूप, अपने भवन तथा भवन के चारों ओर के प्राकृतिक दृश्यों का ऐसा वर्णन प्रस्तुत किया है, जिससे मेघ को अलका नगरी स्थित उसके भवन में पहुँचने में कोई कठिनाई न हो। यक्ष मेघ से कहता है कि-

तुम्हें मेरी प्रियतमा को पहचानने में कोई परेशानी नहीं होगी, क्योंकि वह ब्रह्मा की प्रथम रचना-सी प्रतीत होती है।

तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी
मध्ये क्षामा चकितहरिणीप्रेक्षणा निम्ननाभिः।
श्रोणीभारादलसगमना स्तोकनम्रा स्तनाभ्यां
या तत्र स्याद्युवतिविषये सृष्टिराद्यैव धातुः॥[3]

दुबली पतली नुकीले दाँतों तथा बिम्बफल के समान लाल होठों वाली, हरिणी की तरह आँखों

[3] उत्तर मेघ-19

वाली स्त्री, जो मानों ब्रहमा की आद्या सृष्टि सी है, को देखते ही तुम जरूर पहचान जाओगे। यक्षिणी के सौन्दर्य के माध्यम से कालिदास ने युवतियों के सौन्दर्य का मानक स्थापित करने का प्रयास किया है। प्रत्येक कवि की नायिका उसके लिए संसार की अद्वितीय नायिका होती है। कवियों ने अपनी नायिकाओं के वर्णन में शब्दों का चातुर्य दिखलाया है, किन्तु कालिदास ने यक्षिणी का जैसा सजीव चित्रण किया है, वैसा अन्य किसी कवि के लिए कर पाना आज तक दुष्कर है। आज भी यदि स्त्रियों के सौन्दर्य के प्रतिमान की बात आती है, तो कालिदास द्वारा यक्षिणी के सौन्दर्य का वर्णनमूलक उक्त श्लोक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

यक्ष मेघ से कहता है- जब तुम अलका नगरी में पहुँच जाओगे, तो मेरे बताए हुए मार्ग के अनुसार मेरे वासस्थल को पहचानने में तुम्हें कोई कठिनाई नहीं होगी। किन्तु जब तुम मेरी प्रियतमा के पास पहुँचो और यदि वह गहन निद्रा में सोई हो, तो अपने गर्जन से उसकी निद्रा भंग मत करना।"

तस्मिन्काले जलद ! यदि सा लब्धनिद्रासुखास्या-
दन्वास्यैनां स्तनितविमुखो याममात्रं सहस्व।
मा भूदस्याः प्रणयिनि मयि स्वप्नलब्धे कथञ्चित्
सद्यः कण्ठच्युतभुजलताग्रन्थि गाढोपगूढम् ॥[4]

यक्ष कहता है कि है कि हे मेघ! यदि आवश्यकता हो, तो तुम एक प्रहर तक प्रतीक्षा कर लेना, क्योंकि स्वप्न में प्राप्त होने वाले गाढालिङ्गन के क्षणों की आनन्दानुभूति से मेरी प्रिया वञ्चित न होने पाए। यक्ष का यह कथन स्त्रियों के विषय में कालिदास के कोमल भावपक्ष का परिचायक है।

अब जब मेघ यक्षिणी के पास पहुँचने को है, तो जैसे माता सीता ने हनुमान् जी का

[4] उत्तर मेघ-34

स्वागत किया था, उसी रूप में उसकी प्रियतमा भी मेघ का स्वागत करेगी ऐसा यक्ष को विश्वास है-

श्रोष्यत्यस्मात्परमवहिता सौम्य ! सीमन्तिनीनां

कान्तोदन्तः सुहृदुपगतः सङ्गमात्किञ्चिदूनः॥[5]

तुम्हारे इतना कहने पर उत्कण्ठा से आप्लावित हृदयवाली वह मेरी प्रिया, रूपरहित मुख करके इस प्रकार तुम्हारी ओर देखेगी और तुम्हारा आदर करेगी, जैसे राम का सन्देश लेकर गये हनुमान् को सीता ने देखा था। वह मेरे सन्देश की बातों को ध्यानपूर्वक सुनेगी। क्योंकि स्त्रियों के लिये, मित्रों द्वारा लाए हुए प्रियतम के समाचार और प्रिय मिलन में थोड़ा ही अन्तर होता है।

आज पत्र प्रेषण का कार्य रुक सा गया है, लेकिन जब प्रेमी-प्रेमिका एक-दूसरे को पत्र प्रेषित करते थे तब पत्र का पहुँचना भी मिलन से कम सुखदायक नहीं होता था और यदि सन्देश वाहक स्वयं उपस्थित हो, उसकी तो बात ही निराली है।

यक्ष सबसे पहले अपनी प्रियतमा से अपने हृदय की भावनाओं को इन शब्दों में ज्ञापित करता है-

अङ्गेनाङ्गं प्रतनु तनुना गाढतप्तेन तप्तं
सास्रेणास्त्रुद्रुतमविरतोत्कण्ठमुत्कण्ठितेन।
उष्णोच्छ्वासं समधिकतरोच्छ्वासिना दूरवर्ती

सङ्कल्पैस्तैर्विशति विधिना वैरिणा रुद्धमार्गः॥[6]

विपरीत देवता ने जिसके सारे मार्ग रोक दिए हैं, ऐसा दूर पड़ा हुआ तुम्हारा सहचर तुमसे

[5] उत्तर मेघ-37

[6] उत्तर मेघ-39

भले ही न मिल सके, किन्तु अपने शरीर की दुर्बलता, गाढ़ सन्ताप, निरन्तर आँसुओं से युक्त होना, उत्कण्ठित और दीर्घ निश्वास छोड़ने से मन में यह कल्पना कर लेता है कि मेरे विरह में तुम भी दुबली,सन्तप्त,आँसू बहाती, निरन्तर मिलने को उत्कण्ठावाली और अत्यन्त लम्बी-लम्बी आहें भर रही होगी।

प्रेम की अभिव्यक्ति हेतु साधारण-सी बात को भी विशेष रूप देना प्रेम के इज़हार का एक माध्यम है, जो सृष्टि के आदिकाल से आज पर्यन्त चला आ रहा है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

शब्दाख्येयं यदपि किल ते यः सखीनां पुरस्तात्
कर्णे लोलः कथयितुमभूदाननस्पर्शलोभात्।
सोऽतिक्रान्तः श्रवणविषयं लोचनाभ्यामदृश्य-
स्त्वामुत्कण्ठाविरचितपदं मन्मुखेनेदमाह॥[7]

जो यक्ष, सखियों के सामने कहने योग्य बात को भी तुम्हारे मुख के स्पर्श के लोभ से तुम्हारे कानों में कहने के लिये लालायित रहता था, आज कानों की पहुँच से दूर और आँखों से ओझल हुआ वही तुम्हारा प्रियतम, उत्सुकता से बनाये पदों वाले इस सन्देश को मेरे द्वारा तुमसे कहता है।

कालिदास ने अपने सन्देश काव्य में प्रेमी, प्रेमिका के प्रथम मिलन के बाद स्नेहिल यादों के साथ प्रेम के उन सभी सोपानों की चर्चा की है, जो सृष्टि पर मानव जाति के पदार्पण के प्रारम्भिक काल से लेकर आज पर्यन्त किसी न किसी रूप में भावनाओं के आवेग में सन्निहित है। उनमें से एक है जब कोई साधारण-सी बात को भी प्रेमी, प्रेमिका के कानों

[7] उत्तरमेघ - 40

में जाकर, स्पर्श के बहाने कहने की कोशिश करता है। यक्ष प्रकृति के उन सभी पदार्थों में, यक्षिणी के अंगों की प्रतीति देखने का प्रयास करता है-

श्यामास्वङ्ग, चकितहरिणीप्रेक्षणे दृष्टिपातं,
वक्त्रच्छायां शशिनि शिखिनां बर्हभारेषु केशान्।
उत्पश्यामि प्रतनुषु नदीवीचिषु भ्रूविलासान्
हन्तैकस्मिन्क्वचिदपि न ते चण्डि! सादृश्यमस्ति॥[8]

मैं प्रियङ्गु लताओं में तुम्हारे शरीर की, भयभीत हरिणियों के देखने में तुम्हारे कटाक्षों की, चन्द्रमा में तुम्हारे मुख की, मोरपंखों में तुम्हारे केशों की और पतली नदियों की लहरों में तुम्हारे भ्रूभंगों की सम्भावना करता हूँ, किन्तु खेद है कि हे चण्डि! किसी एक वस्तु में तुम्हारे अनुपम सौन्दर्य की समानता नहीं मिलती।

यक्ष प्रकृति के उपादानों में अपनी प्रियतमा की सम्भावना देखता है, किन्तु अन्ततः उसे निराशा हाथ लगती है। ऐसी सम्भावना है कि कालिदास ने मेघदूत में यक्ष के माध्यम से अपने स्वयं के विरह काल में हुए अनुभवों और भावनाओं की अभिव्यक्ति की है। इस बात में सच्चाई हो या न हो, लेकिन इतना तो निश्चित है कि जिसे विरह की स्वयं अनुभूति न हुई हो, वह ऐसा विरह काव्य नहीं लिख सकता। कालिदास ने यक्ष के माध्यम से अपने सन्देशों में सम्भवतः स्वयं को ही अभिव्यक्त किया है। मानो कलम और कागज का मेल दूर बैठे दो आत्माओं के मिलन का कारण बना हो।

'मेघदूत' एक ऐसा काव्य है, जिसमें प्रेम की जैसी स्वाभाविक अभिव्यक्ति हुई है, वह केवल कल्पना के माध्यम से सम्भव नहीं; उसके लिए सम्भवतः कवि ने स्वयं ही पात्र बनकर जीया है।

---

[8] **उत्तर मेघ**-41

यक्ष कहता है कि मैं चित्र में भी तुमसे जब मिलने का प्रयास करता हूँ, तो विधाता की क्रूर दृष्टि देखो, जो चित्र में भी हमारा मिलन होने नहीं देता।

त्वामालिख्य प्रणयकुपितां धातुरागै शिलाया-
मात्मानं ते चरणपतितं यावदिच्छामि कर्तुम्।
अस्रैस्तावन्मुहुरुपचितैर्दृष्टिरालुप्यते मे
क्रूरस्तस्मिन्नपि न सहते सङ्गमं नौ कृतान्तः॥[9]

हे प्रिये! जब मैं गेरू आदि पदार्थों से पत्थर पर तुम्हारा चित्र बनाता हूँ, जिसमें तुम प्रेम में रूठी हुई हो और अपने को तुम्हारे चरणों पर गिरा हुआ चित्रित करना चाहता हूँ, तो सहसा मेरी दृष्टि बार-बार उमड़े हुए आँसुओं से ढक जाती है। निर्दयी दैव! उस चित्र में भी हम दोनों के मिलन को नहीं सह पाता।

संस्कृत साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान गुरुवर प्रो.सतीश चन्द्र झा ने इस पद को 'मेघदूत' के श्रेष्ठ पद्य की संज्ञा दी है, जिसमें यक्षिणी के प्रति प्रेम और समर्पण जिस रूप में अभिव्यक्त हुआ है, उसे पढ़ते हुए पाठक के भीतर करुण रस का संचार होता है। पाठक कुछ क्षण के लिए भूल जाता है कि वह काव्य पढ़ रहा है अथवा दृश्यों को देख रहा है।

जब प्रेम में समर्पण हो, भावावेग हो तो अपनी प्रेमिका के घर की ओर से आने वाली वायु के स्पर्श में भी उसके स्पर्शजन्य सुखों की प्राप्ति होती हैं।

भित्त्वा सद्यः किसलयपुटान्देवदारुद्रुमाणां
ये तत्क्षीरस्त्रुतिसुरभयो दक्षिणेन प्रवृत्ताः।
आलिङ्ग्यन्ते गुणवति! मया ते तुषाराद्रिवाताः

[9] उत्तर मेघ-42

पूर्वं स्पृष्टं यदि किल भवेदङ्गमेभिस्तवेति॥[10]

हे गुणों से भरी प्रिये! देवदारु वृक्षों की जुड़ी हुई कोपलों को तत्काल खोलकर, उससे निकले हुए चीर बृक्ष से सुगन्धित जो हिमालय की हवाएँ दक्षिण की ओर बहती हैं, मैं उन्हें यह सोचकर आलिङ्गन करता हूँ कि सम्भवतः ये पहले तुम्हारे अंगों का स्पर्श कर मेरे पास आई होंगी। निश्चित रूप से यह अनुभूति कवि की कल्पना है, लेकिन यह कल्पना वास्तविकता से परे नहीं है। इसमें प्रेम की जैसी अनुभूति हो रही है, वह तभी सम्भव है जब एक-दूसरे के प्रति समर्पण हो। यक्ष सोचता है कि शायद मैं जिस वायु का स्पर्श कर रहा हूँ, उसने मेरी प्रियतमा का स्पर्श किया होगा। इसीलिए उत्तर दिशा से आने वाली हवा उसे अत्यन्त प्रिय है।

जीवन, सुख और दुःख के मिश्रित समन्वय का नाम है। इसी बात को अपनी प्रिया को सान्त्वना देते हुए यक्ष कहता है-

नन्वात्मानं बहु विगणयन्नात्मनैवावलम्बे

तत्कल्याणि! त्वमपि नितरां मा गमः कातरत्वम्।

कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा

नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण॥[11]

हे कल्याणि! तुम भी अत्यधिक कातर मत होना, क्योंकि सदा सुख या सदा दुःख किसे प्राप्त होता है? सुख और दुःख की अवस्थाएँ तो चक्र की भाँति ऊपर-नीचे घूमती रहती हैं। अतः वह यक्षिणी से धैर्य धारण करने को कहता है। जीवन में सुख और दुःख की अनुभूति प्रत्येक व्यक्ति को होती है। संतुलित जीवन वही है, जिसमें न तो अत्यधिक प्रसन्नता हो

[10] उत्तर मेघ–44

[11] उत्तर मेघ-46

और न ही अत्यधिक शोक।

महाकवि भास ने स्वप्नवासवदत्तम् नाटक में जीवन के उसी चलायमान अवस्था के बारे में कहा है-

कालक्रमेण जगतः परिवर्त्तमाना

चक्रारपङ्क्तिरिव गच्छति भाग्यपङ्क्तिः॥[12]

यक्ष अपनी प्रियतमा से अनुरोध करता है कि अवशिष्ट चार महीने किसी तरह बिता लो, क्योंकि पुनर्मिलन के बाद पुनःआनन्दमय क्षणों की प्राप्ति हम दोनों को अवश्य होगी।

शापान्तो मे भुजगशयनादुत्थिते शार्ङ्गपाणौ
शेषान्मासान्गमय चतुरो लोचने मीलयित्वा।
पश्चादावां विरहगुणितं तं तमात्माभिलाषं

निर्वेक्ष्यावः परिणतशरच्चन्द्रिकासु क्षपासु॥[13]

भगवान विष्णु के शेषशय्या से उठने पर देवोत्थान एकादशी के दिन हमारे शाप का अन्त हो जाएगा। अतः इन बचे हुए चार महीनों को तुम आँखें मूँदकर, धैर्यपूर्वक बिता लो। इसके बाद हम दोनों विरहकाल में संजोए गए अपने सभी मनोरथों को शरत्कालीन पूर्णिमा की चाँदनी रातों में आनन्दपूर्वक पूर्ण करेंगे।

वाल्मीकि रामायण के सुन्दरकाण्ड में आदिकवि महर्षि वाल्मीकि ने हनुमान जी की सीताजी से भेंट के अवसर पर उन्हें विश्वास दिलाने के लिए श्रीराम की मुद्रिका सीताजी को दिखाकर दूत हनुमान् के द्वारा विश्वास दिलाया गया था।

वानरोऽहं महाभागे दूतो रामस्य धीमतः ।

रामनामाङ्कितं चेदं पश्य देव्यङ्गुलीयकम् ॥[14]

---

[12] स्वप्नवासवदत्तम् 1.4

[13] उत्तर मेघ-47

[14] वाल्मिकीय रामायण,सुन्दर काण्ड 36.2

जिस प्रकार कालिदास ने मेघ को अपनी प्रिया को सच्चा संदेश वाहक गोपनीय प्रसंगों के वर्णन करने के कारण बनाया है। ऐसे ही शायद महाकवि ने आदिकवि महर्षि वाल्मीकि के उन वर्णनों से सीखा हो, जिसका वर्णन आदिकवि ने लंका में सीता को हनुमान् के सच्चा संदेश वाहक के रूप में रामनामाङ्कित मुद्रिका देखकर विश्वास दिलाया था। रामायण में सीता की प्रतीति का वर्णन किया गया है।

गृहीत्वा प्रेक्षमाणा सा भर्तुः करविभूषितम् ।

भर्तारमिव सम्प्राप्तं जानकी मुदिताभवत् ॥[15]

यक्ष के लिए यक्षिणी को यह विश्वास दिलाना आवश्यक था कि मेघ वास्तव में उसके प्रिय के पास से ही सन्देश लेकर आया है। इसके लिए यक्ष ने उनके जीवन के कुछ अत्यन्त अन्तरङ्ग प्रसङ्गों की चर्चा की, ताकि यक्षिणी को मेघ पर पूर्ण विश्वास हो जाए। यक्ष मेघ से अपनी प्रिया के लिए कहता है–

भूयश्चाहं त्वमपि शयने कण्ठलग्ना पुरा मे
निद्रां गत्वा किमपि रुदती सस्वनं विप्रबुद्धा।
सान्तर्हासं कथितमसकृत्पृच्छतश्च त्वया मे

दृष्टः स्वप्ने कितव! रमयन्कामपि त्वं मयेति॥[16]

एक बार जब तुम मेरे गले से लिपटी हुई सोई थी, तब नींद में ही जोर से रोती हुई जाग उठी थी। जब मैंने बार-बार रोने का कारण पूछा, तब तुमने मुस्कराते हुए कहा–

"धूर्त! मैंने तुम्हें स्वप्न में किसी अन्य स्त्री के साथ रमण करते देखा है।"

इस स्वप्न का यक्ष और यक्षिणी के अतिरिक्त किसी और को ज्ञान नहीं हो सकता। आलोचक कदाचित् कालिदास की आलोचना करते हैं कि ऐसे अन्तरङ्ग क्षणों का वर्णन क्या सार्वजनिक रूप से करना उचित है? किन्तु, प्रेम में शिष्टाचार नहीं, विश्वास होता है।

---

[15] वाल्मिकीय रामायण,सुन्दर काण्ड 36.5

[16] उत्तर मेघ-48

जब तक यक्षिणी को यह विश्वास न हो जाता कि मेघ वास्तव में उसके प्रिय का ही सन्देशवाहक है, तब तक वह उससे संवाद के लिए प्रस्तुत नहीं होती। भारतवर्ष की स्त्रियाँ अपनी मर्यादा भली-भांति जानती हैं, जब तक वे निश्चित नहीं हो जाती कि सन्देशवाहक विश्वस्त एवं अन्तरङ्ग है, तब तक वे अपनी जिज्ञासाओं को लेकर आगे नहीं आती।

विरह में ही प्रेम की वास्तविक परीक्षा होती है और इसी बात को कालिदास ने यक्ष के माध्यम से कहलवाया है-

एतस्मान्मां कुशलिनमभिज्ञानदानाद्विदित्वा
मा कौलीनादसितनयने! मय्यविश्वासिनी भूः।
स्नेहेनाहुः किमपि विरहे ध्वंसिनस्ते त्वभोगा-
दिष्टे वस्तुन्युपचितरसाः प्रेमराशीभवन्ति॥[17]

हे काले-काले नेत्रोंवाली! इस उपयुक्त अभिज्ञान (पहचान-चिह्न) से मुझे सकुशल जानकर, मुझ पर विश्वास मत खोना। अर्थात् मेरे प्रेम पर संदेह न करना। लोग कहते हैं कि विरह में प्रेम नष्ट हो जाता है, किन्तु यह उचित नहीं। क्योंकि विरहकाल में अभिलषित वस्तु के लिए रसों के संचित हो जाने से प्रेम का संचय और अधिक होता है।

यह बात सत्य है कि विरह के समय प्रेम में परिपक्वता आती है। आज के दाम्पत्य जीवन में कई समस्याएँ इसलिए भी उत्पन्न होती है कि उनके जीवन में विरह का अभाव है। पहले भारतवर्ष में पुरुष प्रायः गृहस्थ जीवन की आवश्यकताओं के कारण प्रवास पर रहते थे। इस दौरान सञ्चित प्रेम, पुनर्मिलन के समय पुष्पित होकर दोनों को एकाकार कराता था। यक्ष भी अपनी यक्षिणी से पुनर्मिलन की प्रतीक्षा करता है और अपनी प्रियतमा को भी यही सन्देश भिजवाता है। जीवन में यदि कुछ प्राप्त करना हो, तो प्रतीक्षा आवश्यक है। प्रेम में परिपक्वता समय के साथ उसी तरह आती है, जैसे वृक्ष में फल।

[17] उत्तर मेघ-49

मेघदूत का प्रत्येक श्लोक सुन्दर काव्यकला का उदाहरण है। यक्ष का अन्तिम सन्देश तो कालिदास की भावोद्वेगपूर्ण शिष्ट भावों की अभिव्यक्ति है-

एतत्कृत्वा प्रियमनुचितप्रार्थनावर्तिनो मे
सौहार्दाद्वा विधुर इति वा मय्यनुक्रोशबुद्धया।
इष्टान्देशान् विचर जलद! प्रावृषा सम्भृतश्री-
र्मा भूदेवं क्षणमपि च ते विद्युता विप्रयोगः॥[18]

हे मेघ! मित्रता के कारण अथवा विरहाकुल होकर, मेरी इस अनुचित सी प्रतीत होने वाली प्रार्थना को पूर्ण कर दो। इसके बाद वर्षा ऋतु की सम्पूर्ण शोभा से युक्त होकर अपनी इच्छानुसार देश-देशान्तरों में विचरण करो। कभी भी एक क्षण के लिए तुम्हारा अपनी प्रिया विद्युत से वियोग न हो।

यक्ष केवल अपने मिलन, प्रेम और आनन्द की बात नहीं करता; वह मेघ के लिए भी मङ्गलकामना करता है कि उसका कभी अपनी प्रिया से वियोग न हो। यही सच्चे प्रेम की पहचान है। वह मेघ से कहता है कि तुम मेरे सन्देश को मेरी प्रियतमा के पास पहुँचाओगे, ऐसा मुझे विश्वास है। मैं भी ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे जीवन में भी सदा आनन्द की वर्षा होती रहे।

ऐसे तो सम्पूर्ण मेघदूत काव्यकला का उत्तम उदाहरण है। विविध कवियों ने मेघदूत के बारे में सुन्दर समीक्षाएँ की हैं और इसे श्रेष्ठ सन्देश-काव्य की श्रेणी में परिगणित किया है। लेकिन उत्तरमेघ में वर्णित यक्ष का अपने प्रियतमा को प्रेषित सन्देश के एक-एक पद्य मानो माला के मोती सदृश है। जैसे एक मोती को निकाल देने पर माला बिखर जाती है,उसी तरह यक्ष के सन्देश के किसी एक पद को भी यदि आप मेघदूत से निकाल देंगे, तो काव्य में वर्णित भावों का बन्धन बिखर जाएगा।

[18] उत्तर मेघ-52

कालिदास ने गहन चिन्तन-मनन कर अपनी भावना रूपी मोतियों को मेघदूत रूपी काव्यमाला में पिरोने का कार्य किया है, जिसमें उनके जीवन की अभिव्यक्ति और सम्पूर्ण चिन्तन परिलक्षित होता है। निश्चित रूप से ऐसी सम्भावना व्यक्त की जाती है कि मेघदूत केवल यक्ष का सन्देश नहीं, 'मेघ' के माध्यम से कालिदास के अपने स्वयं के भावों की अभिव्यक्ति है।

आज दाम्पत्य जीवन में चाहे जितनी प्रकार की समस्याएँ हों, उसके समाधान में भी कालिदास का यह सन्देशकाव्य सहायक हो सकता है। आज प्रेम की परिभाषा बदल गई है। प्रेम में जहाँ समर्पण का होना आवश्यक है, वहीं वर्तमान में समर्पण कम, प्रत्याशा अधिक दिखती है। यक्ष और यक्षिणी के जीवन में परस्पर प्रत्याशा कम, विश्वास अधिक है। मेघदूत को ध्यानपूर्वक पढ़ते हुए पाठक काव्य में खो जाता है। उसे लगता है कि वह रामगिरि पर्वत की ऊँचाइयों में यक्ष की भावनाओं के साथ जुड़कर मानो उसी के साथ बैठकर पर्वत पर आँसू बहा रहा है। यही कालिदास की कविता की शाश्वतता है। तभी तो आलोचकों ने कालिदास के बारे में ठीक ही कहा है–

पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे
कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावात्
अनामिका सार्थवती बभूव॥

यदि यह आलेख किसी भी प्रेमी-प्रेमिका के जीवन में स्नेह की धारा प्रवाहित करने और शिथिल हो रहे रिश्तों में स्नेह रूपी बन्धन को प्रगाढ़ करने की दिशा में छोटी सी भूमिका भी निर्वहण करता है, तो कालिदास की कविता को अपनी दृष्टि से पुनरावलोकन करने का यह लघु प्रयास सफल समझूँगा। मेघदूत में वर्णित प्रेम के भाव संवेग विषयक कालिदास की कालजयी कविता को विभिन्न भाषाओं और सञ्चार माध्यमों से जन-जन तक पहुँचाना हम सभी संस्कृतानुरागियों और साहित्य प्रेमियों का कर्तव्य है।

सन्दर्भग्रन्थसूची

1. **कालिदासग्रन्थावली- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी सम्पादित, चौखाम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी** 1990
2. **मेघदूतम् अर्कनाथचौधरी सम्पादितम्, जगदीशसंस्कृतपुस्तकालयः, जयपुर**: 2000
3. **कालिदासस्य मेघदूतम्- कुमुदरञ्जनराय सम्पादितम्, कलिकाता** 1964
4. **मेघदूत ओ सौदामिनी, सत्यनारायण चक्रवर्ती सम्पादित, संस्कृतपुस्तकभाण्डार, कलिकाता** 2000.
5. **कालिदासग्रन्थावली- आचार्य सीताराम चतुर्वेदी,चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, काशी, संवत्** -2001.
6. **स्वप्नवासवदत्तम्- महाकवि भास, डॉ. वेदप्रकाश शास्त्री कृत वेद-प्रकाश संस्कृत हिन्दी टीका सहित चौ.ओरिएण्टल, दिल्ली**
7. **संस्कृतसाहित्य विमर्शः - कवि श्री विजेन्द्रनाथ शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास।**
8. **संस्कृत साहित्य का इतिहास - डॉ. उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्भा भारती अकादेमी, वाराणसी**, 2019
9. **मेघदूतम्- डॉ. शिवबालक द्विवेदी(चौ.ओरिएण्टल दिल्ली)।**
10. **साहित्यदर्पण - शास्त्री, शालिग्राम, मोतिलाल बनारसीदास, दिल्ली**, 1977
11. **हिन्दी शब्दसागर- सम्पादक रामचन्द्र वर्मा, नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी, नई दिल्ली।**
12. **Meghadoot** Sanskrit Text with Complete Translation into English. Introduction, Notes, Appendices & Extracts from the Commentaries of

Vallabh, Dakshinavarta and Mallinath. Ed. by R. D. Karmarkar (vraj.ind.studies 9) (H.B.)

13. **Meghadootam of Mahakavi Kalidas** Edited with 'Katyayani' Sanskrit and English Commentary by Jagadguru Acharya Sri Charanteerth Ji Maharaj (K 219)

14. **Abhijnanashakuntalam of Kalidas,** Sanskrit Text with Complete Translation into English, Introduction, Notes, Appendices & Extracts from the Commentaries. Ed. by R.D.Karmarkar (vraj.ind.studies 22)